Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 6, August-2018, ISSN 2230-7540

# स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में साध्य और साधन

**Veemmi Rani***

Research Scholar

***सार –*** ***गांधी जी नीति के प्रवकता और समाज के उद्धारक माने जाते हैं। नैतिकता उनका जीवन था और वे स्वयं धर्मपरायण थे। इसीलिये उनकी समाज नीति या राजनीति भी नैतिकता और आध्यात्मिकता पर आधृत थी। गांधी मनु और याज्ञवल्य की भाँति स्मृतिकार तथा महात्मा बुद्ध और ईसा की तरह पैगम्बर थे, जिन्होंने कत्तव्य और अकत्तव्य, धर्म और अर्धम के सम्बन्ध में अज्ञानी और दिग्भ्रान्त मानव को एक नई रोशनी प्रदान की, इसीलिये गांधी को युग पुरूष[1] माना जाता है।***

----------X----------

## 1. प्रस्तावना

गांधी जी ने अपनी रचनात्मक बुद्धि से पूरब और पश्चिम के नैतिक विचारों के दिव्य अंशों का समन्वय किया और हिन्दू धर्म पर आधारित नीति धर्म को नये परिवेश में उसकी पुनव्र्याख्या प्रस्तुत कर उसे वैज्ञानिक, मानवतावादी और वस्तुवादी रूप प्रस्तुत किया। उन्होंने धर्म और नीति के बीच बढ़ती हुई खाई को पाटकर नीति को धर्म का साधक और धर्म को नीति का आधार मानकर इन दोनों में अद्भुत समन्वय किया। वे अनैतिकता के विरोधी थे। हम यहाँ स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कविता में गांधी दर्शन के नैतिक पक्ष का अध्ययन प्रस्तुत कर रह है।

भारतीय दर्शन के अनुसार मनुष्य जैसा कर्म करता है, वह वैसा ही फल पाता है। गांधी जी का भी मानना था कि उत्तम साध्य के लिये उत्तम साधन भी चाहिये। साधनों की श्रेष्ठता उनके लिये वरेण्य थी, न कि साध्य। उनके अनुसार फल का सम्बन्ध कर्म से हैं, और मनुष्य का अधिकार मात्र कर्म पर है। इसलिये मनुष्य को केवल सत्कर्म ही करने चाहियें। अगर कर्म अर्थात साधन श्रेष्ठ होंगे, तो फल अर्थात साध्य भी श्रेष्ठ ही मिलेगा। वस्तुतः साधन ही विकसित होकर साध्य बन जाता है। इसीलिये गांधी जी ने कहा है, "जैसा साधन वैसा साध्य"[2] उनका मानना है कि "यदि कोई साधनों की शुद्धता का ध्यान रखे तो साध्य अपने आप ठीक रहेगा।[3] गांधी जी किसी भी तथ्य को अनुभव की शिला पर खरी उतरने के बाद ही अपनाते थें। स्वाधीनता संग्राम के दौरान कुछ क्रान्तिकारियों द्वारा स्वाधीनता के लिये अपनाये गये हिंसा, लूटपाट, डकैती, आतंक आदि साधनों को उन्होंने अत्यन्त गर्हित माना। क्योंकि आजादी जैसे पवित्र साध्य के लिये उन्होंने साधनों की पवित्रता को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है:-

**युग राजनीति थी तुमको धुरव सत्य प्रीति का साधन**

**स्वातन्त्रय व्यर्थ जो निज संग लाये अधर्म, स्पर्धा, रण [4]**

गांधी जी साधन की पवित्रता और नैतिकता को मनुष्यता का लक्षण मानते थे। वस्तु स्थिति ग्रह है कि साधनों की पवित्रता के कारण ही कोटि कोटि भारतवासियों ने स्वातंत्रय समर में गांधी जी का साथ दिया। गाघी जी ने साधन और साध्य में निहित अन्तः संगति की स्थापना की, सुमित्रानन्दन पंत ने भी उनके दर्शन की अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में की है:-

**पशु बल की आत्मिक बल में, कर सामूहिक नव परिणति।**

**सत्साध्य शुद्ध साधन में स्थापित की अन्तः संगति। [5]**

नरेन्द्र शर्मा ने अपनी काव्य रचना 'रक्तचन्दन' में गांधी जी की तरह ही साध्य और साधन में तारतम्य की बात कही है:-

**साध्य साधक और साधन में न हो.**

**व्यवधान जब। क्रान्ति तब मंगलमयी, करूणामयी।[6]**

गांधी जी का लक्ष्य सर्वोदिया था। और उनके उस लक्ष्य तक पहुँचने का साधन विशुद्ध अहिंसा थी। वे साधन और साध्य - दोनों को विशुद्ध रखने के कटट्र हिमायती थे। पं० गोकुल चन्द्र शर्मा ने 'गांधी-गौरव' में इसी प्रकार के विचार प्रकट किये है:-

**है साध्य की चिन्ता नहीं, साधन अदूषित चाहिये।**

**जो साध्य संचालक सदा, शुचिता विभूषित चाहिये।[7]**

www.ignited.in

यहाँ पर कवि ने साधन की शुचिता पर अधिक बल देकर गांधी दर्शन की अभिव्यक्ति की है।

**2. सत्य:-**

भारतीय मनीषा सत्य से चिर परिचित रही है। गांधी जी ने सत्य को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि से ग्रहण कर मानव के दिन प्रतिदिन के कर्म क्षेत्र में प्रतिष्ठित किया है। सत्य को कलयुग में व्यावहारिक रूप देने का श्रेय महात्मा गांधी जी को ही दिया जा सकता है। उनके लिये सत्य एक सिद्धान्त मात्र नहीं हैं, अपितु एक आराध्य है, आचरण है। सत्य उनकी साधना का गन्तव्य है। इसी भाव को अभिव्यक्ति प्रदान करते हुये गांधी जी के आश्रम की दिनचर्या का वर्णन गोपाल शरण जी करते हैं:-

**सत्य ध्येय था, सत्य साध्य था तथा सत्य था साधन ।**

**सत्यदेव का ही होता था, वहाँ सदा आराधन।[8]**

गांधी जी को विश्वास हो गया था कि सत्य ही ईश्वर है। यही सर्वोपरि सत्ता है। गांधीवादी विचारधारा के पोषक कवि श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन के 'राम' भी इसी तथ्य को उजागर करते है:-

**सदा एक ही वस्तु पूज्य है, वह है सत्य, असत्य नहीं।**

**असत्य अर्चना का इस जग में, हो सकता है तथ्य नहीं।[9]**

गांधी जी सत्य के इतने कटट्र पालक थे कि असत्य से प्राप्त होने वाले बड़े से बड़े लोभ को भी अस्वीकार करने के पक्षधर थें। 'ऊर्मिला' महाकाव्य के 'राम' सत्य रहित स्वदेश, पूजा प्रस्ताव स्वीकार नहीं करते। उन्हें सत्य मार्ग ही सदैव वरेण्य है -

**"सत्य पराङ्गमुख सदा त्याज्य है,**

**रावण हो या सूर्पणखाँ ।**

**जो सन्मार्ग गमन करता है,**

**वही हमारा बन्धु सखा।[10]**

गांधी जी के अनुसार तो जनसेवा भी सत्य मार्ग से करनी चाहिये। उन्हें अस्त्य से प्राप्त स्वाधीनता ग्राहम नहीं। भारत की स्वाधीनता तो विराट उद्देश्य की पूर्ति में सहायक थी। गोपाल शरण सिंह के शब्दों में -

**उन्हें इष्ट था न्याय सत्य का**

**करना सदा सर्मथन [11]**

गया प्रसाद शुक्ल सनेंही जी ने सत्य का व्रत लेते हुये कहा है कि में सत्य रूपी भगवान की शरण में रहूँगा और सत्य के व्रत का आमरण पालन करूगाँ। इस सत्य व्रत की पहली, मंजिल मौत है और प्रेम मार्ग दूर का है -

**सत्य रूप है नाथ ! तुम्हारी शरण रहूँगा,**

**जो व्रत है लिया लिये आमरण रहूँगा,**

**ग्रहण किये मैं सदा आपके चरण रहूँगा,**

**पहली मंजिल मौत है, प्रेम पंथ है दूर का,**

**सुनता हूँ मौत था यही शूली पर मंसूर का [12]**

सुमित्रानन्दन पंत ने गांधी जी के स्वर में स्वर मिलाकर सत्य को मानव जीवन की परिचालन शक्ति बताया है। उनके अनुसार जिसका शरीर भूतवाद हो और मन प्राणवाद हो, वही सत्य, मानव जीवन का परिचालन कर सकता है।

**वही सत्य कर सकता मानव जीवन का परिचालन।**

**भूतवाद हो जिसका रज तन, प्राणवाद जिसका मन।। [13]**

गांधी जी ने सत्य के महत्व को और बढ़ाया। उन्होंने सत्य रूपी कलश को स्वर्गोच्च शिखर पर रखा और विश्व प्रेम में अहिंसा के गवाक्ष को खोला। पंत जी ने इसी बात को 'श्रद्धा के फूल' कविता में इस प्रकार व्यक्त किया है-

**स्वर्ण शुश्र धर सत्य कलश स्वर्गोच्चू शिखरपर**

**विश्व प्रेम में खोल अहिंसा के गवाक्ष वर। [14]**

पंत जी चाहतें है कि सत्य और अंहिसा से अन्तर्राष्ट्रीय जागृति हो और भूमि के घाव को मानवीय स्पर्शों से धो डालें -

**सत्य अंहिसावन अन्तर्राष्ट्रीय जागरण।**

**मानवीय स्पर्शों से भरते हैं भू के व्रण। [15]**

'सत्य' गांधी दर्शन की प्राणवायु है। गांधी जी के सभी कर्म सत्य से परिचलित थे। उनके लिये सत्य अंधकार में दीपक के समान है। रधुवीर शरण मित्र के शब्दों में -

**सत्य टाँगे शूली पर चाहे, लेकिन पूजा जाएगा।**

**सत के आगे अन्यायों का, मस्तक न उठ पाएगा।**

www.ignited.in

**मंजिल पर चलने वाले के चरणों में दीपक जलते हैं।**

**सत्यवान के साथ तिमिर में, ईश्वर दीप से जलते हैं। [16]**

डॉ० बलदेव प्रसाद मिश्र ने सत्य से रहित व्यक्ति को मृतक के समान बतलाया है -

**सत्य का आग्रह न जिसमें, न कुछ मैत्री ध्यान।**

**वह मनुज है मृतक से भी, अधमं पाप - स्थान। [17]**

डॉ० श्यामनारायण पाण्डेय, लोगों को सत्य पर चले न के लिये प्रेरित **करते हुये गांधी दर्शन की झलक दिखाते हैं -**

**सत्य धर्म पर चलो, असंत्य का विनाश हो।**

**नम्र भाव जग पड़े, स्वधर्म का प्रकाश हो। [18]**

नरेश मेहत्ता ने वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में जीवन गत मूल्यों के अस्तित्व के संकट को समझा है। उनका काव्य राम के द्वारा 'सत्य' की व्यंजना करवाता है-

**मैं सत्य चाहता हूँ**

**युद्ध से नहीं,**

**खड्ग से भी नहीं**

**मानव का मानव से सत्य चाहता हूँ [19]**

श्याम नारायण पाण्डेय ने 'परशुराम' कृति में जीवन गत मूल्यों के शीषस्थ स्थान पर आसीन सत्य की विवेचना की है। परशुराम माँ रेणुका के समक्ष 'सत्य' की महत्ता प्रतिपादित कर रहें है -

**तू भीत मृगी सी क्यों कम्पित**

**माँ तू भी जो सत्पथ पर थी**

**सत्पथ पर पूज्य पिताजी भी**

**वे इति पर थे तू अथं पर थी।**

**- - - - - - - - - - - - - -**

**दोनों का सत्य एक ही था**

**था फेर समझकर, फेर फार**

**जब सत्य सामने आयेगा,**

**हो जायेगा भृगु कुल उद्धार [20]**

गांधी जी ने सत्य को हीं ईश्वर माना था। उनके अनुसार सत्य से पृथ्वी को स्वर्ग बनाया जा सकता है। कुछ इसी प्रकार के विचार पंत के काव्य में दृष्टिगोचर होते हैं -

**महत सत्य से प्रेरित हो मानव उर**

**धरा स्वर्ग हो सुन्दर से सुन्दर तर।[21]**

इस प्रकार स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कविता में गांधी प्रवर्तित 'सत्य' की भावात्मक स्वीकृति सहज ही परिलक्षित की जा सकती है।

**सन्दर्भ**

1. गांधी जी - यंग इंडिया, भाग - 2 - पृ० सं० - 364
2. गांधी जी - हरिजन 11 फरवरी 1939 - पृ० सं० - 48
3. सुमित्रानन्दन पंत, ग्रंथावली - पाचँ, लोकायतन - पृ० सं० - 82
4. सुमित्रानन्दन पंत, ग्रंथावली - पाचँ, लोकायतन - पृ० सं० – 82
5. नरेन्द्र शर्मा - रक्त चन्दन - पृ० सं० - 43
6. पं० गोकुलचन्द्र शर्मा - गांधी गौरव - 10 वॉ सर्ग - पृ० सं० - 84
7. श्री गोपाल शरण सिंह - जगदालोक - पृ० सं० - 71 सर्ग 4
8. श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन - उर्मिला - पृ० सं० ढ 526
9. श्री बाल कृष्ण नवीन - उर्मिला - पृ० सं०, - 526
10. श्री गोपाल शरण सिंह - जगदालोक सर्ग 4
11. सनेही - सत्य कविता - कौमुदी सं० रामनरेश श्रिपाठी - पृ० सं० - 411
12. सुमित्रानन्दन पंत, - स्वर्णधूलि - पृ० सं० - 13

www.ignited.in

13. सुमित्रानन्दन पंत - युगपथ - श्रद्धा के फूल - पृ० सं० - 72-77

14. सुमित्रानन्दन पंत - युगपृथ - श्रद्धा के फूल - पृ० सं० - 72-77

15. रघुबीर शरण मित्र - जननायक - पृ० सं० - 297

16. डा० बलदेव प्रसाद मिश्र, रामराज्य - पृ० सं० - 72

17. डॉ० श्याम नारायण पाण्डेय - झाँसी की रानी (19 वीं हुकांर) - पृ० सं० - 254

18. नरेश मेहत्ता - संशय की एक रात - द्वितीय सर्ग - पृ० सं० - 39

19. श्याम नारायण पाण्डेय - परशुराम - नवम सर्ग - पृ० सं० - 279

20. सुमित्रानन्दन पंत, ग्रंथावली - पाँच, लोकायतन - पृ० सं० - 34

**Corresponding Author**

**Veemmi Rani***

Research Scholar